शिवना एरिया वाटर पार्टनरशिप संस्था, मन्दसौर (म.प्र.)

वर्ष 2014 में सम्पन्न गतिविधियों का प्रतिवेदन

इण्डिया वाटर पार्टनरशिप की सहयोगी संस्था है, शिवना एरिया वाटर पार्टनरशिप संस्था, मन्दसौर।

नवदीप, इंदौर के श्री रविन्द्रजी शुक्ला, दिनांक 17 जनवरी 2012 को मन्दसौर पधारे तथा इण्डिया वाटर पार्टनरशिप का परिचय देते हुए शिवना एरिया वाटर पार्टनरशिप संस्था गठित करने की पहल की।

श्री रविन्द्र जी शुक्ला के प्रशंसनीय प्रयासों से क्षेत्र के कृषि वैज्ञानिक श्री नरेन्द्रसिंह सिपानी की अध्यक्षता में शिवना एरिया वाटर पार्टनरशिप का गठन किया।

इसके पश्चात् श्री रविन्द्र शुक्ला जी का निरन्तर मार्गदर्शन संस्था को प्राप्त हो रहा है।

संस्था द्वारा 17 जनवरी 2012 के पश्चात 10 जून 2012, 18 जून 2012, 5 जुलाई 2012, 25 मार्च 2013, 9 अप्रेल 2013, 29 अप्रेल 2013, 29 जून 2013 को मन्दसौर में निरन्तर बैठक का आयोजन कर निर्णय लिये गये।

29 अप्रेल 2013 को जिला पंचायत, मन्दसौर के सभाकक्ष में शिवना नदी के स्टेक होल्डर्स की वृहद बैठक रखी गई, जिसमें इण्डिया वाटर पार्टनरशिप, नई दिल्ली की महासचिव श्रीमती वीणा खण्डूरी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इस सम्मेलन में शिवना नदी पर जनभागीदारी से निर्मित 24 स्टापडेम का विस्तृत विवरण का प्रस्तुतिकरण किया तथा 24 जनभागीदारी समितियों के अध्यक्ष, सचिव को सम्मानित किया। ये 24 जनभागीदारी समितियां शिवना एरिया वाटर पार्टनरशिप के महत्वपूर्ण स्टेक होल्डर है।

शिवना नदी मन्दसौर जिले में 54 कि.मी. की लम्बाई में बहकर ग्राम झलारा के निकट चम्बल नदी में समाहित होती है।

इस 54 कि.मी. की लम्बाई में नदी पर कुल 28 स्टापडेम बन चुके हैं तथा अब स्टापडेम निर्माण के लिये स्थल उपलब्ध नहीं है।

इस नदी का 8 कि.मी. का भाग मन्दसौर शहर के निकट बहता है। इस भाग में शहर का गन्दा पानी नालों के माध्यम से मिलता है। औद्योगिक गन्दा पानी भी इसी नदी में शहर के निकट मिलता है।

अतः 8 कि.मी. के भाग को प्रदूषण मुक्त, जलकुम्भी मुक्त करने के लिये संस्था विशेष प्रयास कर रही है। नगरपालिका परिषद, मन्दसौर की अध्यक्ष श्रीमती कुसुम गुप्ता संस्था के निर्णयों को क्रियान्वित कर पूर्ण सहयोग कर रही है।

संस्था द्वारा ग्रामीण क्षेत्र में इस नदी पर जनभागीदारी से निर्मित किये स्टापडेम की समिति के स्टेक होल्डर एवं सदस्यों से निरन्तर सम्पर्क कर पानी का किफायती उपयोग, कम पानी की फसल, स्प्रिंकलर, ड्रीप, जैविक खाद का उपयोग, उन्नत कृषि के तरीके बताकर कृषकों मार्गदर्शन देकर प्रेरित कर रही है। ताकि इन स्टापडेमों में बारह माह जल संचय रहे, इससे शिवना नदी पुनर्जीवित करने में सफलता मिलेगी। संस्था ने शिवना नदी किनारे स्थित ग्राम भावगढ़, बादाखेड़ी, लिलदा तथा झलारा पहुँचकर किसानों के मध्य चेतना अभियान चलाया है।

इसी क्रम में 28 अगस्त 2013 को ग्राम भावगढ़, 2 अक्टूबर 2013 को ग्राम बादाखेड़ी 21 दिसम्बर 2013 को ग्राम लिलदा 25 मई 2014 को ग्राम झलारा तथा 13/09/2014 ग्राम बादाखेड़ी में कृषक गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिला स्तर पर औद्योगिक प्रदूषण को रोकने हेतु मन्दसौर शहर के उद्योगपतियों के साथ दिनांक 16/10/2014 को एक वृहद बैठक का आयोजन किया। इसमें क्षेत्रीय सांसद माननीय सुधीर गुप्ता, क्षेत्रीय विधायक माननीय श्री यशपालसिंह सिसोदिया, नगरपालिका परिषद, मन्दसौर की अध्यक्ष श्रीमती कुसुम गुप्ता, शासन के उद्योग विभाग, कृषि, उद्यान तथा कलेक्टर के प्रतिनिधि भी उपस्थित हुए।

संस्था द्वारा कृषि क्षेत्र में खरीफ व रबी फसल के लिये कृषकों की संगोष्ठी का वृहद आयोजन जिला स्तर पर कर चुकी है।

संस्था द्वारा इलाहाबाद बैंक में खाता खोला गया है। संस्था का रजिस्ट्रेशन ट्रस्ट हेतु करने की प्रक्रिया सम्पादित की गई है।

इण्डिया वाटर पार्टनरशिप से संस्था को अभी तक 60000/— की राशि स्वीकृत होकर प्राप्त हो रही है।

संस्था पूर्ण मितव्ययता के साथ शिवना नदी के बेसिन क्षेत्र में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर रही है।

22 मार्च 2014 को विश्व जल दिवस का आयोजन भी किया गया।

स्वच्छता अभियान के माध्यम से शहर की गन्दगी को नदी में मिलने से रोकने के प्रयास संस्था कर रही है।

शिवना नदी के केचमेन्ट में स्थित ग्राम नन्दावता, अचेरा, चांगली, खुंटी, नाहरगढ़ में भी संस्था मार्च 2015 तक कार्यक्रम करने का प्रस्तावित कार्यक्रम है।

माह अप्रेल 2015 में इण्डिया वाटर पार्टनरशिप की उपस्थिति में वृहद आयोजन करने का प्रस्ताव है।

संस्था में शासन के कृषि विभाग, पशु चिकित्सा, जल संसाधन, ग्रामीण विकास विभाग, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग, नगरपालिका परिषद, उद्यानिकी महाविद्यालय, मन्दसौर को विशेष रूप से आमन्त्रित सदस्य बनाया गया है। संस्था में पत्रकार, साहित्यकार भी सम्मिलित है।

संस्था को इण्डिया वाटर पार्टनरशिप तथा नवदीप, इंदौर का सतत मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है। आगामी समय में संस्था अपने उद्देश्यों को सफलता प्रदान करने का पूर्ण प्रयास करेगी।

शिवना एरिया वाटर पार्टनरशिप संस्था, मन्दसौर (म.प्र.)

वर्ष 2016 का प्रस्तावित कैलेण्डर

क्रं.	माह	प्रस्तावित कार्यक्रम	स्थान	रिमार्क
1	जनवरी	ग्राम चौपाल का आयोजन। जल संरक्षण, संवर्द्धन, कृषि व स्वच्छता के सम्बन्ध में जन चेतना सम्बन्धी परिचर्चा	अचेरा	
2	फरवरी	ग्राम चौपाल का आयोजन। जल संरक्षण, संवर्द्धन, कृषि व स्वच्छता के सम्बन्ध में जन चेतना सम्बन्धी परिचर्चा	राजाखेड़ी	
3	मार्च	विश्व जल दिवस	चन्द्रपुरा	
4	अप्रेल	ग्राम चौपाल का आयोजन। जल संरक्षण, संवर्द्धन, कृषि व स्वच्छता के सम्बन्ध में जन चेतना सम्बन्धी परिचर्चा	ढाबला	
5	मई एवं जून	शिवना नदी के किनारे–किनारे पदयात्रा कार्यक्रम (विस्तृत कार्यक्रम पृथक से प्रेषित)	लगभग 20 ग्रामों का भ्रमण। मन्दसौर में वृहद सम्मेलन	ग्रामीणों से चर्चा। भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक वर्तमान उपयोग का जोर है। कृषि तकनीक के सम्बन्ध में सर्वे व सुझाव आदि कार्यवाही प्रस्तावित है। मन्दसौर में वृहद सम्मेलन
6	जुलाई	ग्राम चौपाल का आयोजन। जल संरक्षण, संवर्द्धन, कृषि व स्वच्छता के सम्बन्ध में जन चेतना सम्बन्धी परिचर्चा	पिपलियाकराड़िया	फसल सम्बन्धी प्रशिक्षण कार्यक्रम
7	अगस्त	ग्राम चौपाल का आयोजन। जल संरक्षण, संवर्द्धन, कृषि व स्वच्छता के सम्बन्ध में जन चेतना सम्बन्धी	पाड़लियामारू	

		परिचर्चा		
8	सितम्बर	ग्राम चौपाल का आयोजन। जल संरक्षण, संवर्द्धन, कृषि व स्वच्छता के सम्बन्ध में जन चेतना सम्बन्धी परिचर्चा	बनी	
9	अक्टोबर	ग्राम चौपाल का आयोजन। जल संरक्षण, संवर्द्धन, कृषि व स्वच्छता के सम्बन्ध में जन चेतना सम्बन्धी परिचर्चा	भालोट	
10	नवम्बर	ग्राम चौपाल का आयोजन। जल संरक्षण, संवर्द्धन, कृषि व स्वच्छता के सम्बन्ध में जन चेतना सम्बन्धी परिचर्चा	करनाखेड़ी	
11	दिसम्बर	ग्राम चौपाल का आयोजन। जल संरक्षण, संवर्द्धन, कृषि व स्वच्छता के सम्बन्ध में जन चेतना सम्बन्धी परिचर्चा	चांगली	कृषि फार्म हाऊस पर फसल सम्बन्धी प्रशिक्षण

– उक्तानुसार प्रस्तावित ग्राम में संस्था द्वारा ग्राम चौपाल आयोजित की जावेगी। जन अभियान परिषद व अन्य संस्थाओं से समन्वय किया जावेगा।

– माह मई–जून में शिवना नदी के किनारे स्थित ग्रामों का शिवना नदी के उद्‌गम से समाहित स्थल तक पदयात्रा का विस्तृत कार्यक्रम तैयार किया गया। तद्‌नुसार तैयारी कर पदयात्रा की जाना प्रस्तावित है।

– प्रत्येक कार्यक्रम पर (पदयात्रा छोड़कर) रू. 7000/– का व्यय अनुमानित है। पदयात्रा सहित कुल रू. दो लाख का व्यय सम्पूर्ण वर्ष में किया जाना अनुमानित है।

(नरेन्द्र सिपानी)
अध्यक्ष
शिवना एरिया वाटर पार्टनरशिप संस्था
मन्दसौर (म.प्र.)

दिनांक 19–01–2014 स्थान – सिपानी कृषि फार्म हाऊस

ग्राम चांगली, मन्दसौर

संस्था द्वारा सिपानी कृषि फार्म हाऊस पर शहर मन्दसौर व नीमच के प्रबुद्ध महानुभाव, कवि, साहित्यकार, शायर, कृषि वैज्ञानिक व उन्नत कृषकों की संगोष्ठी आयोजित की गई। मुख्य अतिथि, नवदीप, इंदौर के अध्यक्ष IWP के झोनल प्रेसिडेन्ट, स्वतंत्र वरिष्ठ पत्रकार तथा शिवना एरिया वाटर पार्टनरशिप संस्था का गठन करने वाले श्री रविन्द्र जी शुक्ला की उपस्थिति में कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम में नगरपालिका परिषद अध्यक्ष श्रीमती कुसुम गुप्ता व जिला मन्दसौर के पुलिस अधीक्षक श्री मनोहरजी वर्मा विशेष रूप से उपस्थित थे। कवि श्री प्रमोद रामावत ने कार्यक्रम व कवि गोष्ठी का संचालन किया। महिलाओं की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

दिनांक 22–03–2014 स्थान – अपना घर संस्था परिसर,

ग्राम टोड़ी, मन्दसौर

22 मार्च 2014 को विश्व जल दिवस का आयोजन किया गया। कृषि वैज्ञानिक डॉ.बी.एस. गुप्ता, नगरपालिका परिषद, मन्दसौर की अध्यक्ष श्रीमती कुसुम गुप्ता, प्रशासन प्रतिनिधि डॉ. जे.के. जैन सहित शहर के जलप्रेमी उपस्थित थे। शालाओं के अपना घर के बच्चों ने कार्यक्रम में सहभागिता की।

दिनांक 28–04–2014 स्थान – नगरपालिका सभागार, मन्दसौर

लोकसभा निर्वाचन की आचार संहिता समाप्ति पर 28–04–2014 को नगरपालिका, मन्दसौर के सभागार में संस्था की बैठक आयोजित की गई। शिवना नदी को जलकुम्भी से मुक्त करने के सम्बन्ध में, संस्था का पंजीयन कराने आदि विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक में बताया गया कि जलकुम्भी का हार्वेस्टिंग किया जाकर कम्पोस्ट खाद बनाकर उपयोग किया जा सकता है।

दिनांक 21–05–2014 स्थान – संस्था कार्यालय, मन्दसौर

दिनांक 21–05–2014 को ग्राम झलारा में कृषक संगोष्ठी आयोजित करने का निर्णय लिया गया।

दिनांक 25–05–2014 स्थान – ग्राम झलारा

खरीफ फसल से सम्बन्धित जानकारी देने हेतु ग्राम झलारा में कृषक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कृषि एवं उद्यानिकी महाविद्यालय के वरिष्ठ अधिष्ठाता वैज्ञानिक श्री वी.एम. गुप्ता, डॉ. निगम, डॉ. एस.एन. मिश्रा, कृषि वैज्ञानिक श्री नरेन्द्र सिपानी, कृषक श्री मुकेश पाटीदार, राधेश्याम पाटीदारने खरीफ फसल के सम्बन्ध में तकनीकी जानकारियां दी। कृषकों को बताया गया कि सल्फर का उपयोग सावधानीपूर्वक एवं पूर्ण जानकारी के साथ किया जाना चाहिए। कृषकों को कार्यशाला में खाद में सल्फर का कोटिंग कराने के सम्बन्ध में प्रयोग करके बताया। जिसकी किसानों ने काफी सराहना की तथा बताये गये तरीकों का खेती में उपयोग करने हेतु आश्वस्त किया।

दिनांक 14–08–2014 स्थान –

दिनांक 16–10–2014 स्थान – पशुपतिनाथ केफेटेरिया, मन्दसौर

शिवना एरिया वाटर पार्टनरशिप संस्था, मन्दसौर

28–04–2014 कार्यवाही विवरण

संस्था की बैठक दिनांक 28–04–2014 को आयोजित की गई। मन्दसौर जिले में लोकसभा निर्वाचन, 2014 के अंतर्गत 24 अप्रेल 2014 को मतदान होना था, ऐसी स्थिति में आचार संहिता लागू होने से सेमीनार या ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यक्रम हेतु अनुमति प्राप्त नहीं हो सकी।

मतदान समाप्ति के पश्चात दिनांक 28 अप्रेल 2014 को संस्था की बैठक रखी गई जिसमें निम्नानुसार विचार–विमर्श हुआ –

मन्दसौर शहर में शिवना नदी में भगवान पशुपतिनाथ मंदिर से रेलवे पुलिया (बड़ा पुल) तक लगभग 4 कि.मी. की दूरी में जलकुम्भी आच्छादित हो गई है। यह एक विकट समस्या है। नगरपालिका परिषद द्वारा द्वारा भी जलकुम्भी हटाने के व्यापक प्रयास किए तथा रू. ढाई लाख में ठेका भी दिया गया परन्तु ठेकेदार भी सफल नहीं हो पा रहा है।

संस्था अध्यक्ष एवं कृषि वैज्ञानिक श्री नरेन्द्र सिपानी ने जलकुम्भी का उपयोग कागज बनाने, कम्पोस्ट खाद बनाने तथा जलकुम्भी का चारे के रूप में उपयोग किया जा सकता है, इसके अतिरिक्त जलकुम्भी का रासायनिक विश्लेषण करने पर चर्चा की जाना एवं क्या लाभ एवं उपयोग का पता लगाने के सम्बन्ध मे कार्य करना होगा। इसीप्रकार केमिकल कंट्रोल क्या हो सकता है, केमिकल से सुरक्षा एवं बायलोजिकल कंट्रोल के सम्बन्ध में भी विशेषज्ञों से चर्चा करना होगी।

बैठक में सदस्यों ने सहमति प्रदान की तथा निम्न एजेण्डा अनुसार चर्चा की –

1. संस्था का पंजीयन – रजिस्ट्रार फर्म एवं सोसायटी, उज्जैन द्वारा पंजीयन होना है। ऑनलाईन पंजीयन की व्यवस्था उपलब्ध है। आगामी पन्द्रह दिवस में यह प्रक्रिया पूर्ण की जावे। श्री रावविजयसिंह, श्री विकास भण्डारी तथा श्री सुनील व्यास समन्वयपूर्वक कार्यवाही सम्पन्न करे।
2. सदस्यता – इंडिया वाटर पार्टनरशिप की सदस्यता प्राप्त करने हेतु आवेदन पत्र उपलब्ध है। सदस्यता प्राप्त करने की प्रक्रिया तत्काल पूर्ण की जावे।
3. खरीफ फसलों के सम्बन्ध में किसानों से चर्चा – वार्षिक कैलेण्डर के तहत खरीफ फसलों के सम्बन्ध में किसानों से चर्चा की जाना है। यह कार्यक्रम 25 मई 2014 को

ग्राम एलची में आयोजित किये जाने का निर्णय लिया गया। ग्राम के जनप्रतिनिधि से सम्पर्क कर आयोजन की व्यवस्था सम्बन्धी कार्यवाही की जावे।

4. शिवना नदी में जलकुम्भी हटाने के सम्बन्ध में –
   - जलकुम्भी के अन्य उपयोग पर कृषि वैज्ञानिकों, प्रशासन व नगरपालिका परिषद से तत्काल चर्चा की जाकर आगामी रणनीति बनाई जावे।
   - जलकुम्भी कैसे हटाई जावे, इसका उपयोग कम्पोस्ट खाद के रूप में होता है अतः किसानों को उपलब्ध कराने या किसान इसे कैसे ले जाकर उपयोग करे एवं अन्य उपयोग कैसे हो, जलकुम्भी को नदी से हटाने एवं नदी को जलकुम्भी के प्रदुषण से मुक्त करने के सम्बन्ध में एक वृहद बैठक जनजागरूकता हेतु नगरपालिका परिषद के हॉल में रखने का निर्णय लिया गया। बैठक के आयोजन को यथाशीघ्र मूर्त रूप दिया जावे।
   - जलकुम्भी एक व्यापक समस्या है, यह एक दिन में 04 हेक्टर क्षेत्र से 60 हेक्टर क्षेत्र में फैलती है, इस गति से बढ़ने के कारण इसे आसानी से समाप्त नहीं किया जा सकता। अतः इसकी प्रकृति को ध्यान में रखकर कार्यवाही की जावे।

बैठक में श्री नरेन्द्र सिपानी, श्री बृजेश जोशी, श्री विक्रम विद्यार्थी, श्री आरिफ अबरार, श्री रावविजयसिंह, श्री विकास भण्डारी तथा श्री सुनील व्यास उपस्थित थे।

दिनांक 25 मई 2014 खरीफ फसल पर कार्यशाला ग्राम झलारा में सम्पन्न

मन्दसौर। दिनांक 25 मई 2014 को झलारा में कृषक संगोष्ठी में बताया कि नत्रजन भागता है, पोटाश दौड़ता है, सल्फर चलता है, यह ध्यान में रखकर किसानों को खेती में खाद देने का तरीका, गंधक देने का तरीका तथा बीजोपचार करने की कार्यवाही करना चाहिए।

शिवना एरिया वाटर पार्टनरशिप संस्था द्वारा सीतामऊ तहसील के ग्राम झलारा में आयोजित कृषक संगोष्ठी में खरीफ फसल पर आधारित कार्यशाला में किसानों को डॉ. वी.एस. गुप्ता, वैज्ञानिक उद्यानिकी महाविद्यालय तथा संस्था अध्यक्ष श्री नरेन्द्र सिपानी ने उक्त सम्बन्ध में विस्तार से जानकारी दी।

डॉ. वी.एस. गुप्ता ने किसानों को बताया कि सोयाबीन फसल में गहरी जुताई करने मिट्टी परीक्षण कर तत्वों की अनुशंसा प्राप्त करने तथा बीजोपचार करने जैसे कार्य अनिवार्यतः करें। नाईट्रोजन की 79 प्रतिशत पूर्ति प्रकृति कर देती है, पौधे में गठान बनने के बाद नाईट्रोजन देने की जरूरत नहीं होती है। आपने मिट्टी परीक्षण के लिए मिट्टी के नमूने किस तरह लेना चाहिए विस्तार से बताया।

कृषि वैज्ञानिक श्री नरेन्द्र सिपानी ने बताया कि गंधक देने में किसानों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है। गलत तरीके से गंधक दी जाने पर फसल में लाभ नहीं होता तथा दी गई गंधक व्यर्थ हो जाती है।

सल्फर की पांच प्रकार की श्रेणियों को बताया। तरल सल्फर का उपयोग कैसे करना चाहिए, मौके पर प्रयोग कर बताया। तरल सल्फर से मकड़ी का नाश होता है, सफेद मस्सी की रोक होगी तथा पौधे की पत्ती में जाकर बीमारी को समाप्त करता है।

श्री सिपानी ने जमीन में सल्फर का उपयोग करने हेतु खाद देने के पूर्व खाद पर सल्फर की कोटिंग करने की प्रक्रिया को मौके पर प्रयोग कर बताया। इस प्रकार खाद पर गंधक की कोटिंग कर पूर्व में ही स्टॉक कर लेना चाहिए। जब उपयोग करना हो तब करें। यह टेक्नोलॉजी किसानों की है किसी कम्पनी की नहीं। आपने नाहरगढ़ के श्री सुनील एवं झलारा कि श्री राधेश्याम पाटीदार के नेतृत्व में समूह बनाये, यह समूह इस तकनीकी की जानकारी अन्य किसानों को देकर खाद पर गंधक कोटिंग करने तथा बीजोपचार करने में मदद करेगा।

श्री मुकेश पाटीदार ने बीजोपचार करने का प्रयोग सोयाबीन के बीज पर पावरकोट 105 द्वारा करके बताया। यह एक क्विंटल बीज के लिए 250 मिली लीटर पर्याप्त होता है।

इस प्रकार के बीजोपचार से अंकुरण 8 से 10 प्रतिशत बढ़ने, फसल अवधि 7 दिन बढ़ने, 10 से 15 प्रतिशत पैदावार बढ़ने की संभावना रहती है। इस प्रकार उपचारित बीज एक वर्ष तक रखा जा सकता है। रायजोबीयम का उपयोग करने पर फफूंद नाशक दवा नहीं डालना चाहिए। लहसून फसल के बारे में भी विस्तार से चर्चा की।

श्री सिपानी ने ग्राम झलारा में संतरे के बगीचे वाले किसानों को बताया कि जस्ते की कमी से फल की साईज कम होती है, फलन कम होता है, फल सड़ते हैं। यदि बोरोन की कमी हो तो पत्ते गुच्छे जैसे होने लगते हैं, मेंगनीज की कमी हो तो नीचे पत्ती पर पीलापन होता है। इसमें उपचार के तरीके बताये तथा सलाह दी कि बगीचे में साफ–सफाई रहे, खरपतवार नहीं हो, ग्रेमेक्सोन का उपयोग करें।

किसानों द्वारा बताया गया कि गांव के समीप शिवना व चंबल का संगम स्थल होने से पानी की कमी नहीं है। फ्लड एरिगेशन पद्धति से सिंचाई बगीचे में करते हैं। श्री सिपानी ने किसानों को कहा कि इस प्रकार सिंचाई करने से भूमि खराब होती है। उत्पादकता पर प्रभाव पड़ता है। अतः ड्रीप सिंचाई व फव्वारा सिंचाई का उपयोग करना चाहिए। इस पद्धति से फसल में दवाई देने में भी सुविधा होगी तथा कम पानी में ही अच्छी फसल का उत्पादन होगा। पानी की प्रत्येक बूंद के महत्व को समझना आवश्यक है।

पूर्व जनपद अध्यक्ष श्री महेन्द्रसिंह ने आभार व्यक्त करते हुए पानी का मितव्ययता से उपयोग करने का पूरजोर समर्थन करते हुए किसानों से अपील की।

कार्यक्रम में पत्रकार श्री विक्रम विद्यार्थी, श्री योगेश गुप्ता, अपना घर के श्री राव विजयसिंह, कवि शायर श्री अबरार, सहायक यंत्री श्री सुनील व्यास, शैलेन्द्र व्यास तथा ग्राम झलारा के सरपंच प्रतिनिधि श्री राधेश्याम पाटीदार सहित ग्राम झलारा, नाहरगढ़, खूंटी, बोलिया, कयामपुर, रणायरा, फतेहगढ़ के अनेक किसान उपस्थित थे।

World Water Day
2013
International Year of Water Cooperation
शिवना ऐरिया वाटर पार्टनरशिप संस्था
मंदसौर (मध्य प्रदेश)
(इंडिया वाटर पार्टनरशिप नई दिल्ली की सहयोगी संस्था)
खरीफ फसल संबंधी कार्यशाला

3 दशपुर एक्सप्रेस, बुधवार 28 मई 2014

पौधे में गठान बनने के बाद नहीं होती नाईट्रोजन की जरूरत

खरीफ फसल पर ग्राम झलारा में कार्यशाला सम्पन्न

मन्दसौर। नत्रजन भागता है, पोटाश दौड़ता है, सल्फर चलता है, यह ध्यान में रखकर किसानों को खेती में खाद देने का तरीका, गंधक देने का तरीका तथा बीजोपचार करने की कार्यवाही करना चाहिए।शिवना एरिया वाटर पार्टनरशिप संस्था द्वारा सीतामऊ तहसील के ग्राम झलारा में आयोजित कृषक संगोष्ठी में खरीफ फसल पर आधारित कार्यशाला में किसानों को डॉ. वी.एस. गुप्ता, वैज्ञानिक उद्यानिकी महाविद्यालय तथा संस्था अध्यक्ष नरेन्द्र सिपानी ने उक्त सम्बन्ध में विस्तार से जानकारी दी।

डॉ. वी.एस. गुप्ता ने किसानों को बताया कि सोयाबीन फसल में गहरी जुताई करने मिट्टी परीक्षण कर तत्वों की अनुशंसा प्राप्त करने तथा बीजोपचार करने जैसे कार्य अनिवार्यत: करें। नाईट्रोजन की 79 प्रतिशत पूर्ति प्रकृति कर देती है, पौधे में गठान बनने के बाद नाईट्रोजन देने की जरूरत नहीं होती है। आपने मिट्टी परीक्षण के लिए मिट्टी के नमूने किस तरह लेना चाहिए विस्तार से बताया।कृषि वैज्ञानिक नरेन्द्र सिपानी ने बताया कि गंधक देने में किसानों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है। गलत तरीके से गंधक दी जाने पर फसल में लाभ नहीं होता तथा दी गई गंधक व्यर्थ हो जाती है।

सल्फर की पांच प्रकार की श्रेणियों को बताया। तरल सल्फर का उपयोग कैसे करना चाहिए, मौके पर प्रयोग कर बताया। तरल सल्फर से मकड़ी का नाश होता है, सफेद मस्सी की रोक होगी तथा पौधे की पत्ती में जाकर बीमारी को समाप्त करता है।

श्री सिपानी ने जमीन में सल्फर का उपयोग करने हेतु खाद देने के पूर्व खाद पर सल्फर की कोटिंग करने की प्रक्रिया को मौके पर प्रयोग कर बताया। इस प्रकार खाद पर गंधक की कोटिंग कर पूर्व में ही स्टॉक कर लेना चाहिए। जब उपयोग करना हो तब करें। यह टेक्नोलॉजी किसानों की है किसी कम्पनी की नहीं। आपने नाहरगढ के सुनील एवं झलारा कि राधेश्याम पाटीदार के नेतृत्व में समूह बनाये, यह समूह इस तकनीकी की जानकारी अन्य किसानों को देकर खाद पर गंधक कोटिंग करने तथा बीजोपचार करने में मदद करेगा।

मुकेश पाटीदार ने बीजोपचार करने का प्रयोग सोयाबीन के बीज पर पावरकोट 105 द्वारा करके बताया। यह एक क्विंटल बीज के लिए 250 मिली लीटर पर्याप्त होता है।

इस प्रकार के बीजोपचार से अंकुरण 8 से 10 प्रतिशत बढ़ने, फसल अवधि 7 दिन बढ़ने, 10 से 15 प्रतिशत पैदावार बढ़ने की संभावना रहती है। इस प्रकार उपचारित बीज एक वर्ष तक रखा जा सकता है। रायजोबीयम का उपयोग करने पर फफूंद नाशक दवा नहीं डालना चाहिए। लहसून फसल के बारे में भी विस्तार से चर्चा की।श्री सिपानी ने ग्राम झलारा में संतरे के बगीचे वाले किसानों को बताया कि जस्ते की कमी से फल की साईज कम होती है, फलन कम होता है, फल सड़ते हैं। यदि बोरोन की कमी हो तो पत्ते गुच्छे जैसे होने लगते हैं, मैंगनीज की कमी हो तो नीचे पत्ती पर पीलापन होता है। इसमें उपचार के तरीके बताये तथा सलाह दी कि बगीचे में साफ-सफाई रहे, खरपतवार नहीं हो, ग्रेमेक्सोन का उपयोग करें।किसानों द्वारा बताया गया कि गांव के समीप शिवना व चंबल का संगम स्थल होने से पानी की कमी नहीं है। फ्लड एरिगेशन पद्धति से सिंचाई बगीचे में करते हैं। श्री सिपानी ने किसानों को कहा कि इस प्रकार सिंचाई करने से भूमि खराब होती है। उत्पादकता पर प्रभाव पड़ता है। अत: ड्रीप सिंचाई व फव्वारा सिंचाई का उपयोग करना चाहिए। इस पद्धति से फसल में दवाई देने में भी सुविधा होगी तथा कम पानी में ही अच्छी फसल का उत्पादन होगा। पानी की प्रत्येक बूंद के महत्व को समझना आवश्यक है।पूर्व जनपद अध्यक्ष महेन्द्रसिंह ने आभार व्यक्त करते हुए पानी का मितव्ययता से उपयोग करने का पूरजोर समर्थन करते हुए किसानों से अपील की।कार्यक्रम में पत्रकार विक्रम विद्यार्थी, योगेश गुप्ता, अपना घर के राव विजयसिंह, कवि शायर अबरार, सहायक यंत्री सुनील व्यास, शैलेन्द्र व्यास तथा ग्राम झलारा के सरपंच प्रतिनिधि राधेश्याम पाटीदार सहित ग्राम झलारा, नाहरगढ, खूंटी, बोलिया, कयामपुर, रणायरा, फतेहगढ के अनेक किसान उपस्थित थे।

मारी

कुकड़ेश्वर। फरियादी किशनलाल भील पिता नरसिंग भील उम्र 35 साल नि. ढोढर ने पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराई कि कुकड़ेश्वर रामपुरा रोड ईमली के झाड़ के पास 27 मई को बस क्र. एमपी 44 एचए 0459 के चालक ने तेज गति व लापरवाहीपूर्वक बस चलाकर मुझ फरियादी के ट्रेक्टर को टक्कर मार दी।

जमीन बंटवारे को लेकर पुत्र ने पिता को पीटा

पिपलिया मण्डी। ग्राम सेलारी में जमीन बंटवारे को लेकर एक पुत्र ने अपने पिता के साथ मारपीट की। पुलिस ने आरोपी पुत्र के खिलाफ प्रकरण दर्ज किया है। जानकारी के अ[illegible]

गुरुवार, 29 मई, 2014 राज एक्सप्रेस

विद्या[illegible] चोरी[illegible]

मनासा [illegible] ... मनासा उत्कृष्ट विद्यालय परिसर से विद्यालय में रखे लोहे के 20 बंडल कीमत 10 हजार रू. आरोपी घनश्याम, हरलाल, देवीलाल, महेन्द्र व सत्यनारायण ने चुरा लिये जिस पर पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार कर सद्दल जब्त की।

रंगीन इपिक कार्ड बनवाएं मतदाताः कलेक्टर

नीमच। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार पात्र नवीन मतदाताओं तथा इपिक कार्डधारी मतदाताओं के रंगीन इपिक कार्ड बनाने के निर्देश दिए गए हैं। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी विकास सिंह [illegible]

शिवना एरिया वाटर पार्टनरशिप संस्था द्वारा ग्राम झलारा में कृषक संगोष्ठी का आयोजन

खरीफ फसल के लिए कार्यशाला

■ राज न्यूज नेटवर्क

सीतामऊ। नत्रजन भागता है, पोटाश दौड़ता है, सल्फर चलता है, यह ध्यान में रखकर किसानों को खेती में खाद देने, गंधक देने का तरीका तथा बीजोपचार करने की कार्यवाही करना चाहिए।

शिवना एरिया वाटर पार्टनरशिप संस्था द्वारा ग्राम झलारा में आयोजित कृषक संगोष्ठी में खरीफ फसल पर आधारित कार्यशाला में उद्यानिकी महाविद्यालय डॉ. बीएस गुप्ता ने उक्त संबंध में विस्तार से जानकारी दी।उन्होंने किसानों को बताया कि सोयाबीन फसल में गहरी जुताई करने मिट्टी परीक्षण कर तत्वों की अनुशंसा प्राप्त करने तथा बीजोपचार करने जैसे कार्य अनिवार्यतः करें। नाईट्रोजन की 79 प्रतिशत पूर्ति प्रकृति कर देती है, पौधे में गठान बनने के बाद नाईट्रोजन देने की जरूरत नहीं होती है। डॉ. गुप्ता ने मिट्टी परीक्षण के लिए मिट्टी के नमूने किस तरह लेना चाहिए के बारे में विस्तार से बताया।

कृषि वैज्ञानिक व संस्था अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह सिपानी ने कृषि जानकारी देते हुए बताया कि गंधक देने में किसानों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है। गलत तरीके से गंधक दीए जाने पर फसल में लाभ नहीं होता तथा दी गई गंधक व्यर्थ हो जाती है। सल्फर की पांच प्रकार की श्रेणियों, तरल सल्फर का उपयोग कैसे करना चाहिए, इस बारे में उन्होंने मौके पर प्रयोग कर बताया। तरल सल्फर से मकड़ी का नाश होता है, इससे सफेद मस्सी की रोक होगी तथा पौधे की पत्ती में जाकर बीमारी को समाप्त करता है।

श्री सिपानी ने जमीन में सल्फर का उपयोग करने हेतु खाद देने के पूर्व खाद पर सल्फर की कोटिंग करने की प्रक्रिया को मौके पर प्रयोग कर बताया। खाद पर गंधक की कोटिंग कर पूर्व में ही स्टॉक कर लेना चाहिए। यह टेक्नोलॉजी किसानों की है किसी कम्पनी की नहीं। उन्होंने नाहरगढ़ के सुनील एवं झलारा के राधेश्याम पाटीदार के नेतृत्व में समूह बनाए, यह समूह इस तकनीकी की जानकारी अन्य किसानों को देकर खाद पर गंधक कोटिंग करने तथा बीजोपचार करने में मदद करेगा। श्री सिपानी ने ग्राम झलारा में संतरे के बगीचे वाले किसानों को बताया कि जस्ते की कमी से फल की साईज छोटी होती है, फलन कम होता है, फल सड़ते हैं। यदि बोरोन की कमी हो तो पत्ते गुच्छे जैसे होने लगते हैं, मेंगनीज की कमी हो तो नीचे पत्ती पर पीलापन होता है। उपचार के तरीके बताए तथा सलाह दी बगीचे में साफ-सफाई रहे, खरपतवार नहीं, ग्रेमेक्सोन का उपयोग करें।

कार्यक्रम में ये रहे मौजूद

कार्यक्रम में पत्रकार विक्रम विद्यार्थी, योगेश गुप्ता, अपना घर के राव विजयसिंह, शायर आरिफ अबरार, सहायक यंत्री सुनील व्यास, शैलेन्द्र व्यास तथा ग्राम झलारा के सरपंच प्रतिनिधि राधेश्याम पाटीदार सहित ग्राम झलारा, नाहरगढ़, खूंटी, बोलिया, कयामपुर, रणायरा, फतेहगढ़ के अनेक किसान उपस्थित थे।

पैदावार बढ़ने की रहती है संभावना

मुकेश पाटीदार ने बीजोपचार करने का प्रयोग सोयाबीन के बीज पर पावरकोट 105 द्वारा करके बताया कि यह एक क्विंटल बीज के लिए 250 मिली लीटर पर्याप्त होता है। इस प्रकार के बीजोपचार से अंकुरण 8 से 10 प्रतिशत बढ़ने, फसल अवधि 7 दिन बढ़ने, 10 से 15 प्रतिशत पैदावार बढ़ने की संभावना रहती है। इस प्रकार उपचारित बीज एक वर्ष तक रखा जा सकता है। रायजोबीयम का उपयोग करने पर फफूंद नाशक दवा नहीं डालना चाहिए। लहसून फसल के बारे में भी विस्तार से चर्चा की।किसानों द्वारा बताया गया कि गांव के समीप शिवना व चंबल का संगम स्थल होने से पानी की कमी नहीं है। बाढ़ सिंचाई पद्धति से सिंचाई बगीचो में होती है। श्री सिपानी ने किसानों को बताया कि इस प्रकार सिंचाई करने से भूमि खराब होती है। उत्पादकता पर प्रभाव पड़ता है। टपक सिंचाई व फव्वारा सिंचाई का उपयोग करना चाहिए। इस पद्धति से फसल में दवाई देने में भी सुविधा होगी तथा कम पानी में ही अच्छी फसल का उत्पादन होगा। पानी की प्रत्येक बूंद के महत्व को समझना आवश्यक है। महेन्द्रसिंह ने आभार व्यक्त करते हुए पानी का मितव्ययता से उपयोग करने का पूरजोर समर्थन करते हुए किसानों से अपील की।

दिनांक 27/07/2014 कार्यवाही विवरण

दिनांक 27/07/2014 को संस्था की बैठक सिपानी कृषि फार्म हाऊस पर सम्पन्न हुई। बैठक में श्री सिपानी जी अध्यक्ष ने बताया कि हमने दिनांक 6 जुलाई 2014 को बिजनेस करस्पेन्डेंस समाचार पत्र समूह के संयुक्त तत्वावधान में स्थानीय उद्योगपतियों के साथ सेमीनार का आयोजन किया। जिसमें स्थानीय व्यवस्थाओं के दृष्टिगत उद्योग विकास की संभावनाओं के साथ उद्योगों से हो रहे शिवना नदी प्रदूषण व शिवना शुद्धिकरण के सम्बन्ध में विस्तार से चर्चा की गई। उद्योगपतियों व उपस्थित अतिथियों क्रमशः सांसद मान. श्री सुधीर गुप्ता, विधायक मन्दसौर मान. श्री यशपालसिंह सिसौदिया, नगरपालिका अध्यक्ष मान. श्रीमती कुसुम गुप्ता ने भविष्य की योजना बनाकर क्रियान्वयन हेतु आश्वस्त किया तथा यथाशीघ्र एक सेमीनार और आयोजित करने हेतु संस्था को दायित्व सौंपा है। यह हमारे लिए एक उपलब्धि है।

संस्था के उपस्थित सदस्यों, उद्यानिकी महाविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. गुप्ता, डॉ. पाण्डे, डॉ. मिश्रा व अन्य विद्यार्थियों के साथ सिपानी कृषि फार्म एवं अनुसंधान केन्द्र पर हरियाली महोत्सव के दौरान वृक्षारोपण किया। बैठक सधन्यवाद समाप्त की गई।

दिनांक 16–10–2014विश्व खाद्य दिवस पर संगोष्ठी सम्पन्न

मन्दसौर। विश्व में खाद्य समस्या एक चिन्ता का विषय है। किसी के पास खाने को इतना है कि सोचता है क्या–क्या खाऊँ, किसी के पास खाने की समस्या है कि खाने का इन्तजाम कैसे करूं, इसी व्यवस्था को सुधारने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य होना चाहिए। अनाज के भण्डार भरे हैं, खाद्यान्न बिखर रहा है, दूसरी तरफ अनेक नागरिक खाद्यान्न संकट का सामना करने पर मजबूर है, शासन स्तर पर इस सम्बन्ध में आवश्यक कदम उठाने की आवश्यकता है। उक्त विचार शिवना एरिया वाटर पार्टनरशिप संस्था मन्दसौर द्वारा आयोजित ''विश्व–खाद्य दिवस'' के अवसर पर आयोजित गोष्ठी में विशेष रूप से उपस्थित ई टीवी उर्दू चैनल के राज्य स्तरीय ब्यूरो चीफ श्री आफताब आलम द्वारा व्यक्त किये गये।

इस अवसर पर संस्था अध्यक्ष श्री नरेन्द्र सिपानी ने बताया कि क्षेत्र के नागरिकों ने शिवना नदी पर महत्वपूर्ण व उल्लेखनीय जनभागीदारी से 15 से अधिक स्टापडेम निर्मित कर जलनिधि संचित की है, तथा हजारों हेक्टर भूमि में अपने संसाधनों से इस पानी के माध्यम से सिंचाई कर रहे हैं। इस क्षेत्र में कम पानी में, किफायती तरीके से पोष्टिक खाद्यान्न का उत्पादन कैसे हो, इस विषय पर जन–जागरूकता की आवश्यकता है। नागरिकों को सभी तरह का खाद्यान्न, पौष्टिक खाद्यान्न व पर्याप्त

खाद्यान्न उपलब्ध हो, ऐसे खाद्यान्न का उत्पादन हो, ऐसी कार्य योजना बनाकर प्रयासों की आवश्यकता है। शिवना एरिया वाटर पार्टनरशिप संस्था शिवना नदी के केचमेन्ट क्षेत्र स्थित ग्राम भावगढ़, बादाखेड़ी, लिलदा, झलारा, चांगली आदि क्षेत्रों में किसानों के मध्य पहुँची है। उनमें पानी के किफायती उपयोग के सम्बन्ध में चर्चा की है तथा रबी व खरीफ फसलों के उत्पादन, फसल चयन, उन्नत तकनीकों की जानकारी दी जाने का कार्य किया है तथा निरन्तर अन्य ग्रामों में जाने का हमारा कार्यक्रम है। नगरपालिका के साथ मिलकर मन्दसौर शहर के समीप प्रदूषित शिवना को स्वच्छ बनाने के भी प्रयास होंगे। इसमें शहर के नागरिकों और संस्थाओं की भूमिका भी सुनिश्चित करने के प्रयास होंगे ताकि शिवना शुद्धि एक आंदोलन बन सके।

कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित नगरपालिका परिषद, मन्दसौर की अध्यक्ष श्रीमती कुसुम गुप्ता ने शिवना शुद्धिकरण के सम्बन्ध में नागरिकोंव संस्थाओं के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि निश्चित ही शिवना शुद्धि के लिए नगरपालिका परिषद ने भी हमारे जनप्रतिनिधियों के सहयोग से कार्ययोजना बनाने एवं समय–समय पर शुद्धिकरण से सम्बन्धित कार्य के प्रयास किये हैं, शिवना शुद्धि एक आंदोलन बने ऐसे प्रयास होंगे। विश्व खाद्य दिवस को जल से जोड़ते हुए कहा कि फसल, सब्जी व अनाज उत्पादन शुद्ध व स्वच्छ जल से होने चाहिए ताकि हमें पौष्टिक अच्छी गुणवत्ता का खाद्यान्न उपलब्ध हो सके।

वरिष्ठ पत्रकार डॉ. घनश्याम बटवाल ने शिवना नदी शुद्धिकरण के साथ कालाभाटा व रामघाट बांध क्षेत्र को पर्यटक स्थल बनाने के प्रस्ताव का उल्लेख करते हुए कहा कि ये दोनों स्थल पेयजल संरक्षित झोन में आते हैं, पर्यटक स्थल, पिकनिक स्पॉट बनाने पर पेयजल भंडार प्रदूषित होने की संभावनाओं को नकारा नहीं जा सकेगा। यह चिन्ता का विषय है, अतः प्रस्ताव पर इस प्रकार की कार्यवाही हो कि पेयजल भंडार शुद्ध बना रहे।

इस अवसर पर डॉ. अशोक जैन, आरिफ अबरार ने शायरी, गजल प्रस्तुत कर खाद्य दिवस पर संदेश दिया। श्री राव विजयसिंह जी ने भी सम्बोधित किया।

डॉ. एस.एम. पामेचा, हृदयरोग विशेषज्ञ ने बताया कि खाद्यान्न का सम्बन्ध स्वास्थ्य से होता है, पौष्टिक व उचित मात्रा में खाद्यान्न का उपयोग करना चाहिए। जैविक खाद्यान्न का उपयोग करना चाहिए। 1500 से 1700 कैलोरी भोजन लेना चाहिए। सकारात्मक सोच रखना चाहिए तथा नियमित व्यायाम करना चाहिए ताकि बिमारीयों से बचा जा सके।

कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ पत्रकार श्री ब्रजेश जोशी ने किया व वरिष्ठ पत्रकार एवं संस्था के सचिव श्री विक्रम विद्यार्थी ने आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर कार्यक्रम में पत्रकार श्री हरनामसिंह चंदवानी, समाजसेवी श्री बंशीलाल टांक, श्री शशिकांत गर्ग, श्री योगेश गुप्ता, श्री नेमीचंद राठौर, पत्रकार श्री विनोद गौड़, डॉ. शाहिद मंसूरी, इंजीनियर सुनील व्यास सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।